रंग बिरंगे गीत

CHILDREN'S BOOK TRUST · NEW DELHI

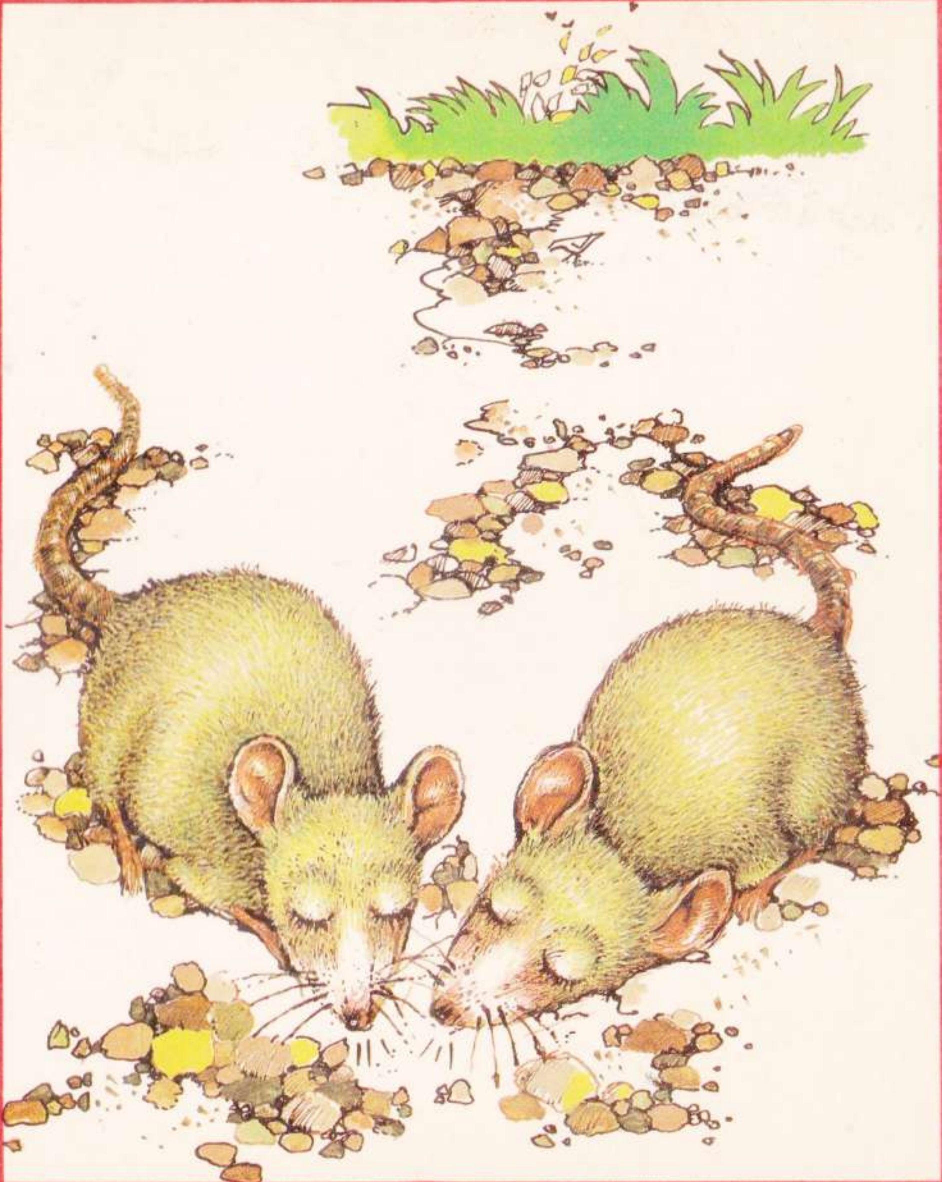

ये कवितायें एसोसिएशन ऑफ राइटर्स एण्ड इलस्ट्रेटर्स फॉर चिल्ड्रन के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत की गई हैं।

RANG-BIRANGE GEET

ISBN 81 - 7011 - 326 - 1

© चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट १९८६

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

रंग बिरंगे गीत

चित्रकार : मृणाल मित्र

सुबह

सुबह हुई तो मुर्गा बोला,
कुकड़ूं कूं भई, कुकड़ूं कूं,
मुर्गा बोला कुकड़ूं कूं
सुबह हुई अब सोते क्यूं ?
पेड़ों से चिड़ियाँ उठ बोलीं
चीं-चीं-चीं, भई चीं-चीं-चीं,
चिड़ियाँ बोली चीं-चीं-चीं,
शुरू करो अब काम सभी ।

सावित्री सिंह

नई पुस्तक

दौड़ के आओ मुन्ने राजा
छोड़ दो चकरी रख दो बाजा,
अभी-अभी हैं आये भैया
कैसी पुस्तक लाये भैया ।
इक पन्ने पे बैठा शेर
हिरन खड़े देखो मुंह फेर,
इक पन्ने पे बालों वाला
भालू देखो काला-काला ।
इस पन्ने पर बड़ा-सा हाथी
जिसकी सूँड़ चले बल खाती,
झूला बन्दर झुला रहे हैं
देखो तुमको बुला रहे हैं ।

प्रतिभा नाथ

पढ़ाई

नहीं पढ़ूंगा, नहीं पढ़ूंगा
ला दो चाहे ढेर मिठाई,
पहले मुझे बताओ पापा
किसने की थी शुरू पढ़ाई ?

दिविक रमेश

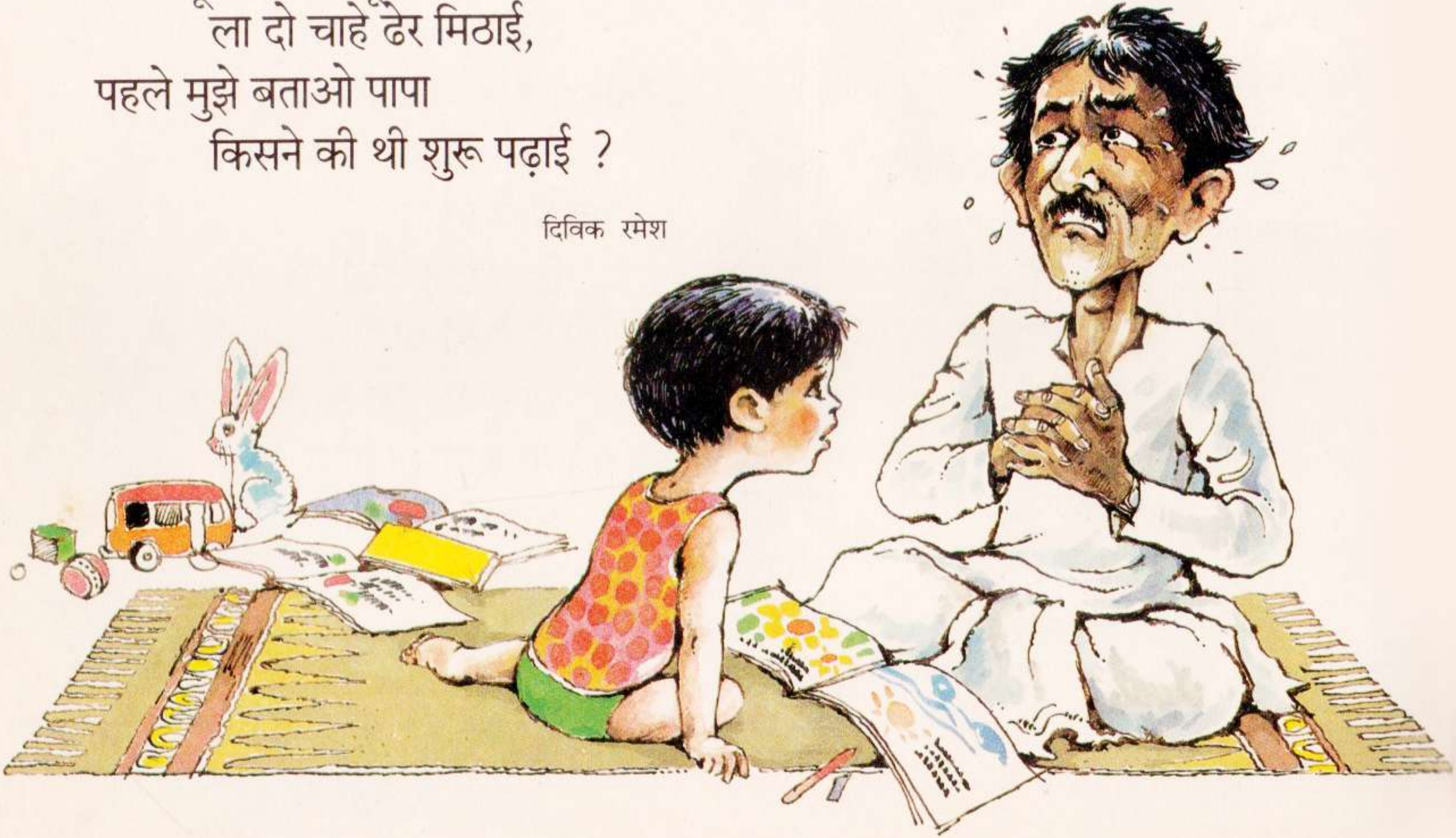

मेरी बिल्ली

मेरी बिल्ली, काली-पीली
पानी से वह हो गई गीली,
गीली हो कर लगी कांपने
आंछी-आंछी लगी छींकने ।
मैं फिर बोली कुछ तो सीख,
बिन रुमाल के कभी न छींक ।

विनीता कृष्णा

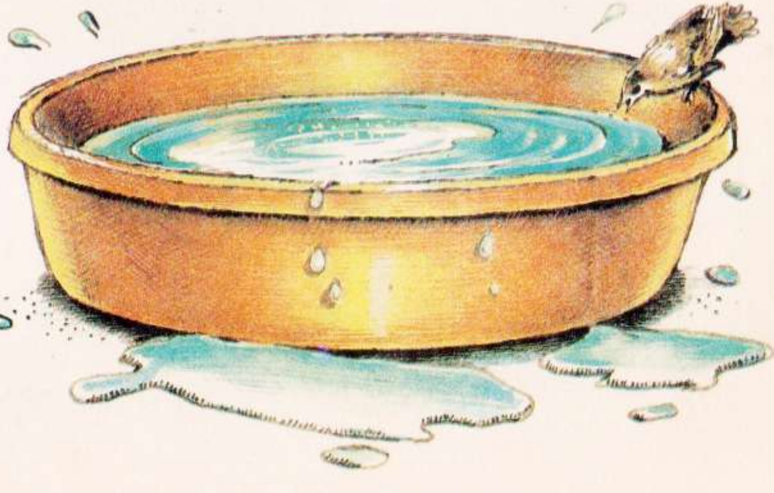

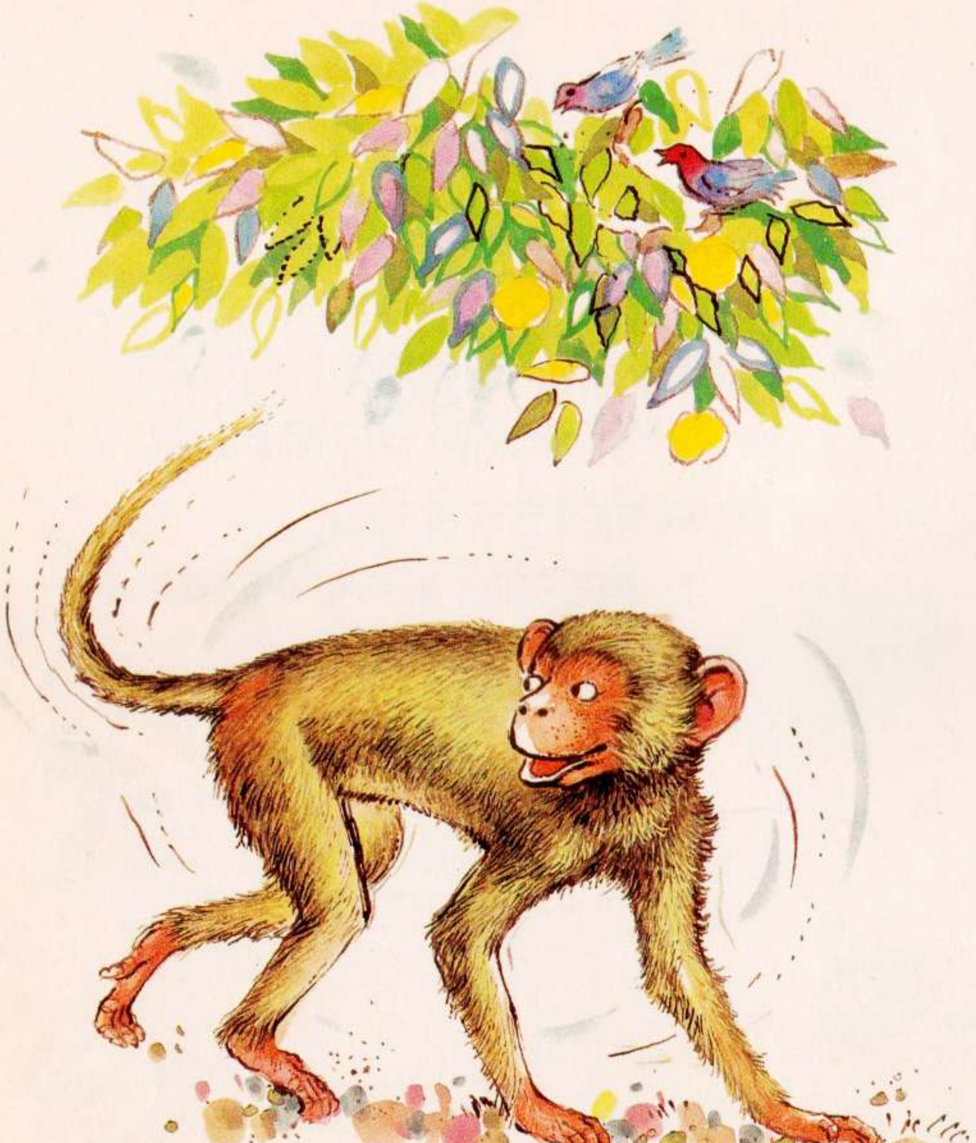

बन्दर

दायें-बायें बन्दर जाये
दुम भी पीछे आये,
गोल-गोल वह बन्दर घूमे
दुम भी चक्कर खाये ।
आगे भागा, पीछे भागा
बैठा ऊपर नीचे,
और घूम कर देखा उसने
दुम पीछे की पीछे ।

शान्ता मोहन

मेंढ़क मामा

मेंढ़क मामा खेल खेलते
उछल-उछल कर पानी में,
कभी किसी को धक्का देते
रहते जब शैतानी में ।
तभी मेंढ़की डांट पिलाती
कहती "माफी मांगो जी,
धक्का दिया किया उधम क्यों
दूर यहां से भागो जी ।"
मेंढ़क मामा रोने लगते
मिलती उनको माफी तब,
उन्हें मेंढ़की चुप करने को
तुरंत खिलाती टॉफी तब ।

श्रीप्रसाद

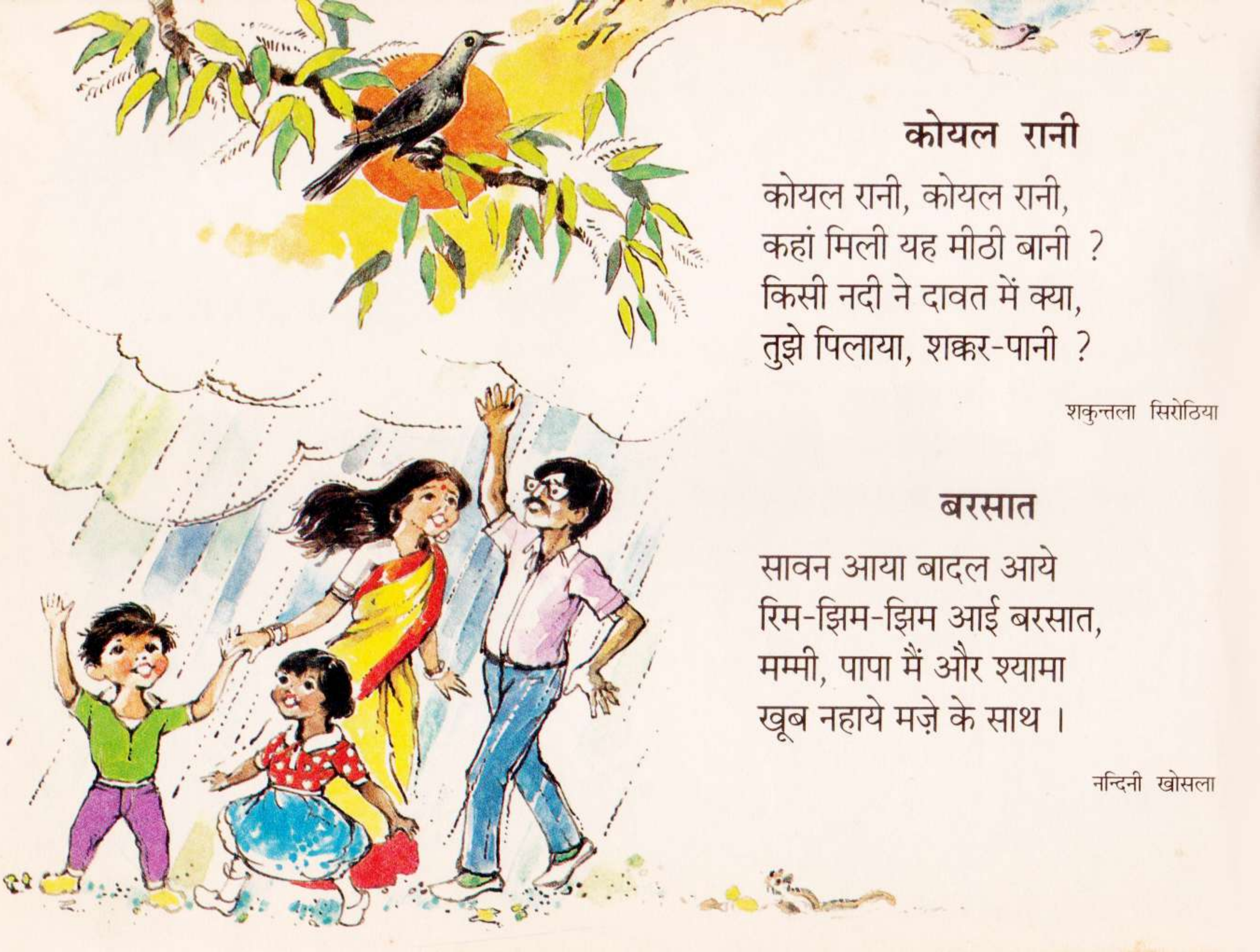

कोयल रानी

कोयल रानी, कोयल रानी,
कहां मिली यह मीठी बानी ?
किसी नदी ने दावत में क्या,
तुझे पिलाया, शक्कर-पानी ?

शकुन्तला सिरोठिया

बरसात

सावन आया बादल आये
रिम-झिम-झिम आई बरसात,
मम्मी, पापा मैं और श्यामा
खूब नहाये मज़े के साथ ।

नन्दिनी खोसला

कबूतरों की रेल

देखो देखो, देखो भाई,
कबूतरों ने रेल चलाई,
गुट-गुट-गुट-गुट, कुट-कुट-कुट-कुट
छुक-छुक-छुक-छुक, छुक-छुक-छुक-छुक ।
चोंच निकाले, देख रहे हैं
आस-पास के पंछी सारे,
हंसते-हंसते, मिला रहे हैं
छुक-छुक के सुर में सुर सारे ।
खूब चलाई, खूब चलाई
खूब चलाई, देखो रेल,
सदा चलेगी, सदा चलेगी
अगर रहा, हम सबमें मेल ।

दिविक रमेश

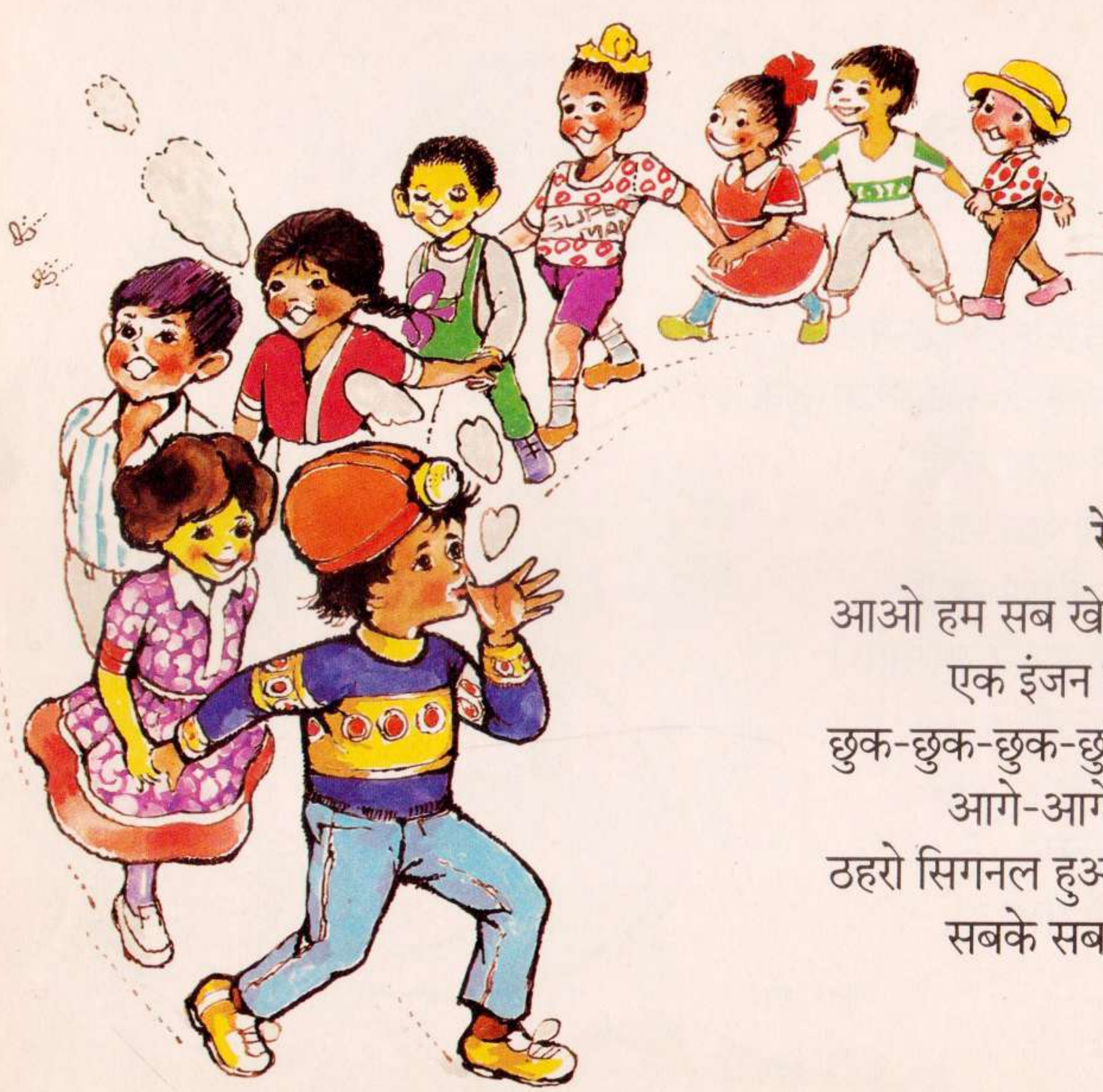

रेल

आओ हम सब खेलें खेल
एक इंजन बाकी सब रेल,
छुक-छुक-छुक-छुक चले चलो
आगे-आगे बढ़े चलो ।
ठहरो सिगनल हुआ नहीं,
सबके सब अब रुको यहीं ।

विमलचन्द्र 'मानव'

म्याऊं

"म्याऊं-म्याऊं" बिल्ली बोली
"क्या मैं आऊं ?"बिल्ली बोली,
मैंने उठ कर कुंडी खोली
अन्दर आ गई बिल्ली भोली ।
बिल्ली बोली "म्याऊं-म्याऊं
भूख लगी है, क्या मैं खाऊं ?
दूध पिला दो तब मैं जाऊं ।"

प्रीतवन्ती महरोत्रा

मक्खी

प्लेट में थी मिठाई रक्खी
भिन-भिन करती आई मक्खी,
बैठ लगी वो उसको खाने
छोटे-छोटे पंख हिलाने ।

मैंने उसको बड़ा हटाया
मैंने उसको बहुत उड़ाया,
फिर भी उड़ी नहीं वह मक्खी
भिन-भिन करती बैठी मक्खी ।

शारदा कपूरिया

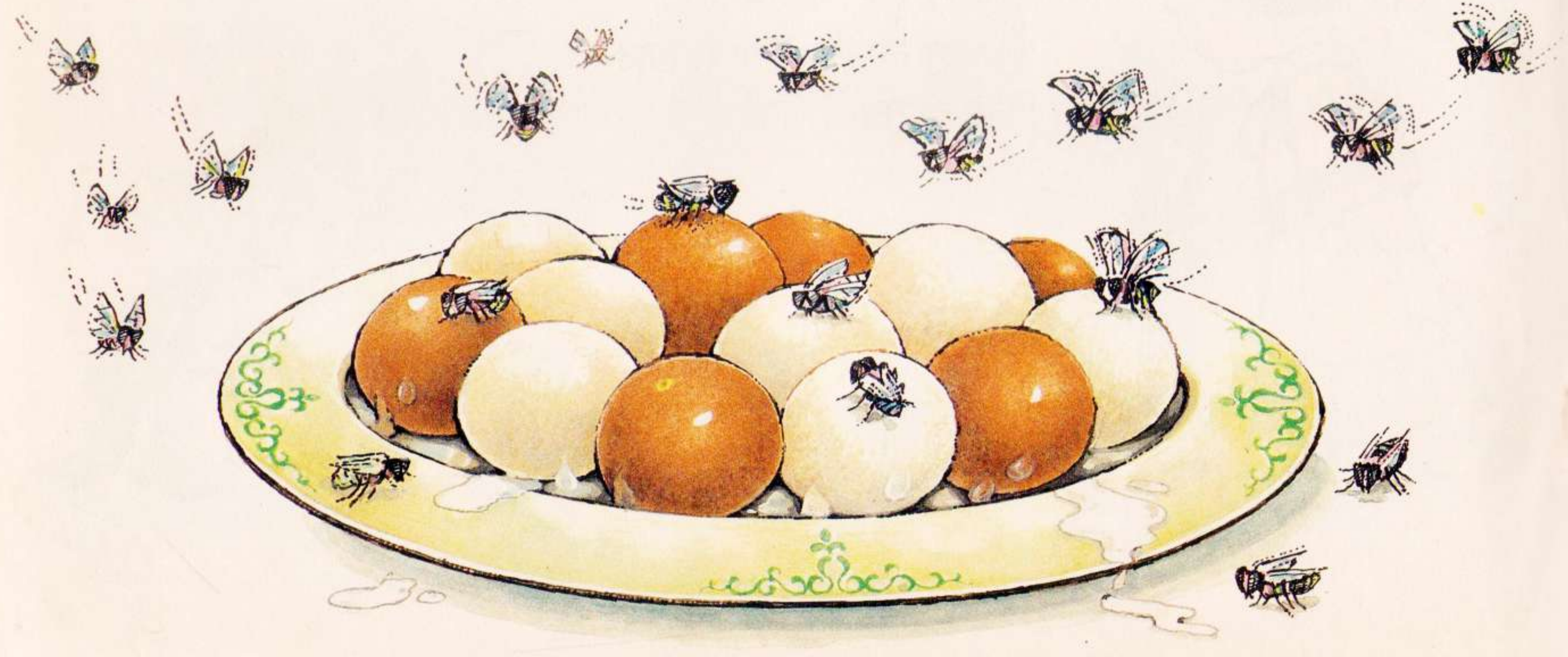

टिल्लू यार

घोड़े पर हो गये सवार
चले सैर को टिल्लू यार,
मगर उन्हें कुछ रहा न ध्यान
कोड़ा मारा ऐसा तान ।
घोड़ा भागा सरपट चाल
बुरा हुआ टिल्लू का हाल,
जैसे-जैसे कसी लगाम
वैसे-वैसे बिगड़ा काम ।
आगे जाकर आया खेत
जिसमें था कुछ ज्यादा रेत,
गिरे वहीं पर टिल्लू यार
कभी नहीं फिर हुए सवार ।

श्रीप्रसाद

रज्जू और कद्दू

रज्जू के बेटे ने
मिट्टी के ढेरों में,
कद्दू के कई बीज
बोये, बोये, बोये ।

रात का अंधेरा था
चूहों का डेरा था,
दो चूहे बीज खाने
गये, गये, गये ।

सुबह को न ढेर थे
न कद्दू के बीज थे,
दो चूहे मोटे होके
सोये, सोये, सोये ।

प्रतिभा नाथ

चिड़ियाघर

आज उड़ायें बेपर की
सैर करें चिड़ियाघर की,
मुरगा बोला कुकड़ूं कूं
और कबूतर गुटरूं गूं ।

तोते टें-टें करते हैं
हिरन कुलांचे भरते हैं,
लौट चलो अब घर भैया
नाचेंगे ता-ता थैया ।

विमल चन्द्र 'मानव'

पेड़

अगर पेड़ भी चलते होते
कितने मज़े हमारे होते,
बांध तने में उसके रस्सी
चाहे जहां कहीं ले जाते ।
जहां कहीं भी धूप सताती
उसके नीचे झट सुस्ताते,
जहां कहीं वर्षा हो जाती
उसके नीचे हम छिप जाते ।
भूख सताती अगर अचानक
तोड़ मधुर फल उसके खाते,
आती कीचड़, बाढ़ कहीं तो
झट उसके ऊपर चढ़ जाते ।

दिविक रमेश

बक बक

अरि मोरी दइया बिछुआ ने काटा
शेर दहाड़ा हो-हो-हो,
गीदड़ नाचे, गाए लोमड़ी
कुत्ता भौंके, भों-भों-भों ।

हवा चली मस्तानी रे
झर-झर बरसा पानी रे,
नदी का पानी मगर पी गया
सब मछली चिल्लानी रे ।

शकुन्तला सिरोठिया

बड़ी बुआ

खाने को दो खीरकदम
खाने को दो मालपुआ,
खाने को देना पेड़े
मांग रही है बड़ी बुआ ।

बड़ी बुआ ने खाया सब
बड़े पलंग पर बैठीं तब,
अब क्या लेंगी बड़ी बुआ
शायद मांगेंगी हलुआ ।

श्रीप्रसाद

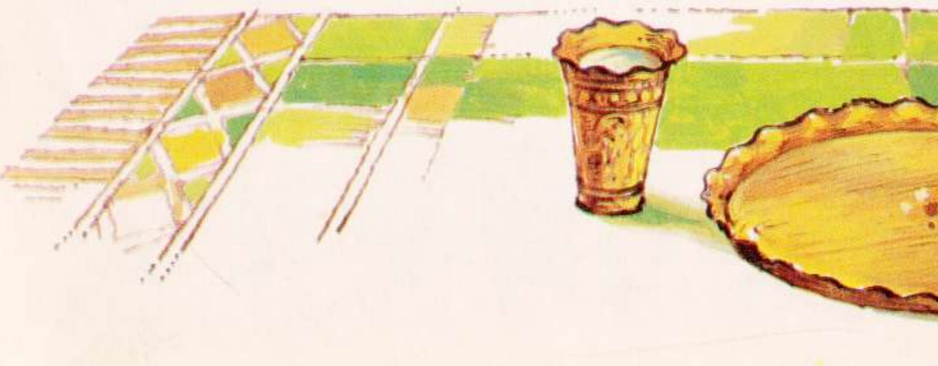

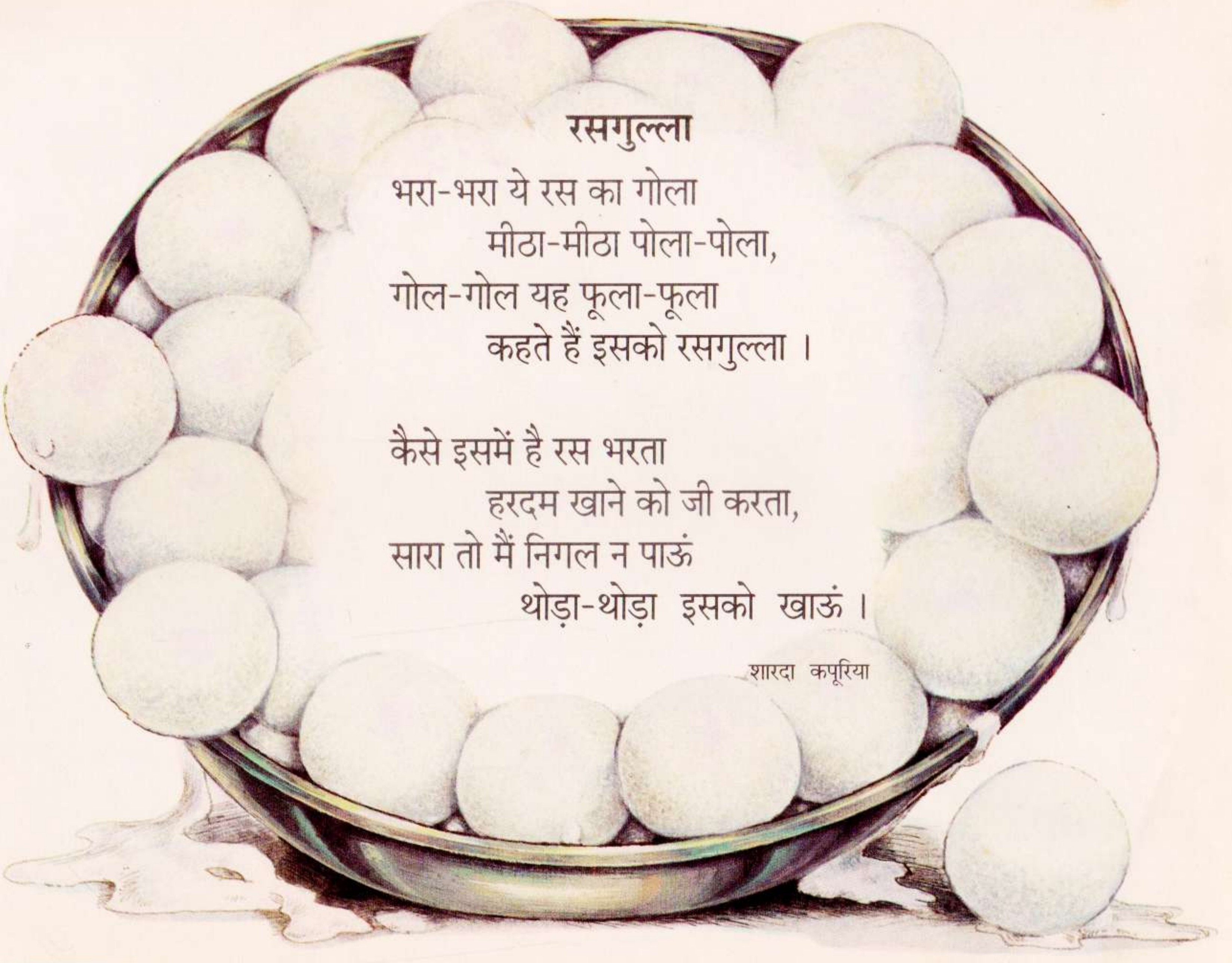

रसगुल्ला

भरा-भरा ये रस का गोला
मीठा-मीठा पोला-पोला,
गोल-गोल यह फूला-फूला
कहते हैं इसको रसगुल्ला ।

कैसे इसमें है रस भरता
हरदम खाने को जी करता,
सारा तो मैं निगल न पाऊं
थोड़ा-थोड़ा इसको खाऊं ।

शारदा कपूरिया

सरदी

सरदी ने फहराया झंडा
रातें ठंडी दिन भी ठंडा,
सभी धूप में चलकर खेलें
गेंद, कबड्डी, गिल्ली डंडा ।

शिव 'मृदुल'

टुंग-टुंग टुट

टुंग-टुंग टुट, टुंग-टुंग टुट
चूहे करते खुट-खुट-खुट,
भूल गये हैं लीलीपुट
टुंग-टुंग टुट, टुंग-टुंग टुट ।

कृष्णचन्द्र तिवारी 'राष्ट्रबन्धु'

चम्मच

क्या चाचाजी चौक गये हैं
क्या वे चम्मच लायेंगे ?
चांदी की चमचम चम्मच से
अब हम चटनी खाएंगे... ।

चाचीजी भी चली गई हैं
जरा चांदनी आई जब,
चार चम्मचें, ले चाचीजी
पैदल चल कर आईं अब ।

चंपा चाची भी चम्मच से
मीठी चटनी खाती हैं,
चानीं बुआ मुझे चम्मच से
चटनी रोज चटाती हैं ।

श्रीप्रसाद

जोकर

जोकर मुझे बना दो जी
मोटी तोंद लगा दो जी,
नाक गाल को खूब सजाकर
गोल-गोल गेंदें चिपकाकर ।

उछल-उछल कर कूद-कूद कर
रोतों को भी खूब हंसाकर,
हंसा-हंसा कर आंसू लाऊं
जी करता जोकर बन जाऊं ।

दिविक रमेश

सीटी

‘धा धिन’ ‘धा धिन’ तबला बोले
‘दा दिर’, ‘दा दिर’ कहे सितार,
बीना कानों में रस घोले
घुंघरू छम-छम करें पुकार ।
बंसी की भी तान है मीठी,
हम को प्यारी अपनी सीटी ।

शारदा कपूरिया

इडली दोसा

इडली दोसा खाते हैं हम
सांभर या चटनी के साथ,
कॉफी पीकर जाते हैं हम
धोकर अपने मुंह और हाथ ।

प्रीतवन्ती महरोत्रा

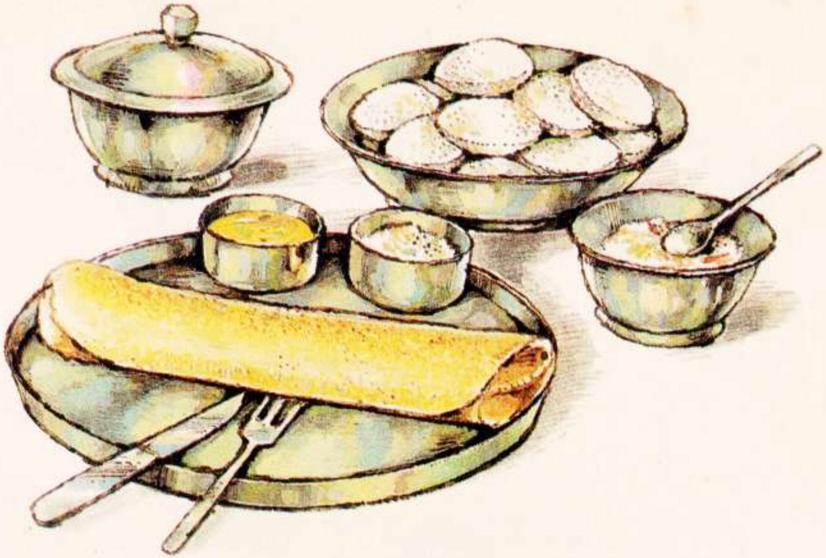

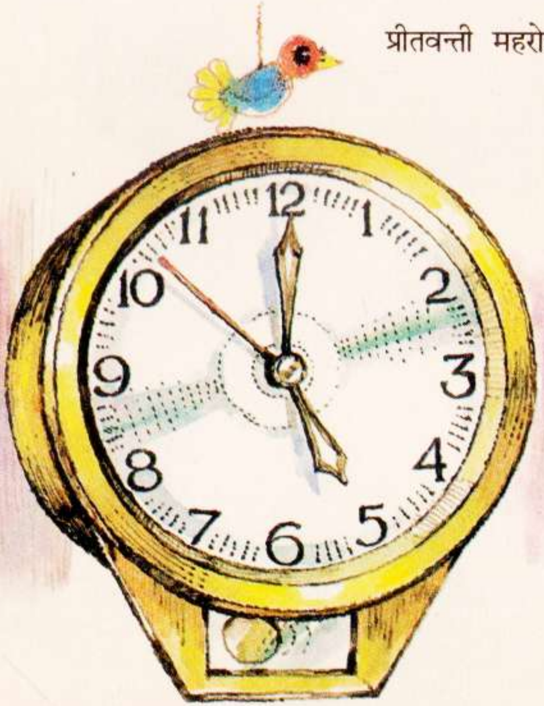

पांच बजे

बड़ी घड़ी जब पांच बजाती
अम्मा बैठी चाय बनाती,
गरम पकौड़े खाते हैं
जब बाबू घर को आते हैं ।

प्रतिभा नाथ

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नेहरु हाउस, ४ बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई
दिल्ली द्वारा प्रकाशित और ट्रस्ट के मुद्रणालय इन्द्रप्रस्थ प्रेस, नई
दिल्ली द्वारा मुद्रित ।

H 171
Rs 6
ISBN-81-7011-326-1